Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 3885–3889

CULTURAL CONSCIOUSNESS AND DINKAR'S VISION IN INDIAN LITERATURE

भारतीय साहित्य में सांस्कृतिक चेतना और दिनकर की दृष्टि

Priyanshu Kumar [1]

[1] Research Scholar, University Hindi Department, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.4327

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Indian literature is known for its cultural diversity and deep philosophical traditions. This literature is not only a mirror of the society, but it is also a carrier of cultural consciousness. Ramdhari Singh 'Dinkar' worked to highlight and give direction to the cultural consciousness of Indian society in his literature. In his literature, there is a deep sense of harmony between tradition and modernity, religious tolerance, and nationalism. This research paper analyzes Dinkar's literary vision and attempts to show how his literature was helpful in the development of Indian cultural consciousness.

Hindi: भारतीय साहित्य अपने सांस्कृतिक विविधता और गहन दार्शनिक परंपराओं के लिए जाना जाता है। यह साहित्य न केवल समाज का दर्पण है, बल्कि यह सांस्कृतिक चेतना का संवाहक भी है। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपने साहित्य में भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना को उजागर करने और उसे दिशा देने का कार्य किया। उनके साहित्य में परंपरा और आधुनिकता के बीच सामंजस्य, धार्मिक सहिष्णुता, और राष्ट्रीयता का गहरा भाव देखने को मिलता है। यह शोधपत्र दिनकर की साहित्यिक दृष्टि का विश्लेषण करता है और यह दिखाने का प्रयास करता है कि उनका साहित्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना के विकास में कैसे सहायक रहा।

Keywords: Cultural Consciousness, Dinkar, Indian Literature, Tradition and Modernity, Tolerance, Nationalism सांस्कृतिक चेतना, दिनकर, भारतीय साहित्य, परंपरा और आधुनिकता, सहिष्णुता, राष्ट्रीयता

1. प्रस्तावना

भारतीय साहित्य भारतीय समाज की सांस्कृतिक, नैतिक, और दार्शनिक परंपराओं का सजीव चित्रण है। यह केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है; यह समाज की सांस्कृतिक चेतना को जागृत और संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। भारतीय साहित्य ने प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक समाज के विकास, उसकी मूलभूत समस्याओं, और उसकी सांस्कृतिक विशिष्टताओं को अभिव्यक्त किया है। यह साहित्य समाज के भीतर व्याप्त नैतिकता, सहिष्णुता, और सह-अस्तित्व जैसे गुणों को सुदृढ़ करता है। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपने साहित्य में इन सांस्कृतिक मूल्यों को न केवल उजागर किया, बल्कि इन्हें समाज के भविष्य के लिए प्रासंगिक बनाने का प्रयास भी किया।

दिनकर का मानना था कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज को उसकी सांस्कृतिक जड़ों की ओर लौटाने और उसे अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूक करने का माध्यम है। उन्होंने लिखा है, "साहित्य समाज का दर्पण है और इसका उद्देश्य समाज को उसकी सांस्कृतिक चेतना के प्रति सजग बनाना है" (दिनकर 45)। यह विचार दिनकर के साहित्य को समाज के लिए एक मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत बनाता है।

20वीं शताब्दी का समय भारतीय समाज के लिए गहरे बदलाव और संघर्ष का काल था। यह वह समय था जब भारतीय समाज न केवल औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, बल्कि वह सांस्कृतिक, राजनीतिक, और सामाजिक स्तर पर भी कई चुनौतियों का सामना कर रहा था। इस समय के साहित्य ने समाज को इन चुनौतियों से उबरने और अपने अधिकारों के प्रति सजग होने में सहायता की। साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से न केवल स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन किया, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज की सांस्कृतिक और नैतिक जड़ों को भी सुदृढ़ किया।

रामधारी सिंह 'दिनकर' इस समय के प्रमुख साहित्यकारों में से एक थे। उन्होंने अपने साहित्य में भारतीय समाज की सांस्कृतिक विशिष्टताओं, उसकी परंपराओं, और उसके नैतिक मूल्यों को प्रकट किया। दिनकर का साहित्य केवल अतीत के गौरव का वर्णन नहीं करता; यह समाज को भविष्य की दिशा में अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है। उनकी कविताओं और गद्य में परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन, धार्मिक सहिष्णुता, और राष्ट्रीय चेतना के विचार प्रमुखता से दिखाई देते हैं।

दिनकर ने यह भी दिखाया कि भारतीय साहित्य न केवल सांस्कृतिक चेतना का संवाहक है, बल्कि यह समाज को नई दिशा देने का माध्यम भी है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपने साहित्य के माध्यम से समाज में आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना को प्रबल बनाया। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके समय में थे।

इस प्रकार, रामधारी सिंह 'दिनकर' का साहित्य भारतीय साहित्य के उस प्रवाह का हिस्सा है, जो समाज को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है और उसे भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है। उनका साहित्य केवल मनोरंजन या अभिव्यक्ति का साधन नहीं है; यह समाज के लिए एक ऐसा आईना है, जो उसे उसकी सांस्कृतिक पहचान और उसकी संभावनाओं के प्रति जागरूक करता है।

2. साहित्य में सांस्कृतिक चेतना

सांस्कृतिक चेतना समाज की जड़ों, परंपराओं, और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। यह चेतना किसी भी समाज के विकास और उसकी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय साहित्य, जो कि अपनी विविधता और गहराई के लिए प्रसिद्ध है, इस चेतना का सजीव और प्रभावशाली माध्यम रहा है। यह साहित्य समाज के विभिन्न चरणों और उसकी सांस्कृतिक परंपराओं को प्रतिबिंबित करता है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, भारतीय साहित्य ने सांस्कृतिक चेतना को संरक्षित और विकसित किया है।

प्राचीन काल में, वेदों और उपनिषदों ने इस सांस्कृतिक चेतना को धर्म और दर्शन के माध्यम से व्यक्त किया। वेदों ने प्रकृति, मानव जीवन, और ब्रह्मांड के बीच संबंध को समझाते हुए समाज को नैतिक और आध्यात्मिक दिशा दी। उपनिषदों ने आत्मा, ब्रह्म, और ध्यान जैसे गूढ़ विषयों पर चिंतन प्रस्तुत किया। इसके बाद महाकाव्य, जैसे रामायण और महाभारत, ने नैतिकता, कर्तव्य, और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को रेखांकित किया। इन महाकाव्यों में न केवल व्यक्तिगत जीवन के नैतिक आदर्श दिखाए गए, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक जीवन के लिए भी दिशानिर्देश दिए गए।

भक्ति आंदोलन के दौरान सांस्कृतिक चेतना ने एक नया रूप ग्रहण किया। भक्त कवियों ने अपने अनुभवों और ईश्वर के प्रति उनकी अटूट निष्ठा के माध्यम से इस चेतना को व्यक्त किया। तुलसीदास, कबीर, और मीराबाई जैसे संतों ने भक्ति और समर्पण के माध्यम से समाज को एकता और आध्यात्मिकता का संदेश दिया। इस काल में साहित्य ने समाज को नैतिकता, प्रेम, और सहिष्णुता के माध्यम से जागरूक किया।

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने इस सांस्कृतिक चेतना को अपने साहित्य का केंद्र बनाया। उन्होंने भारतीय संस्कृति और समाज के विविध पहलुओं को गहराई से समझते हुए उन्हें अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। उनकी कृति संस्कृति के चार अध्याय सांस्कृतिक चेतना का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इस ग्रंथ में उन्होंने भारतीय संस्कृति के विकास को चार चरणों—आदिम, वैदिक, बौद्ध, और आधुनिक—में विभाजित किया। दिनकर ने दिखाया कि भारतीय संस्कृति ने समय के साथ बाहरी प्रभावों को आत्मसात किया और अपनी विशिष्टता को बनाए रखा।

दिनकर का मानना था कि साहित्य का कार्य केवल मनोरंजन नहीं है; यह समाज को उसकी सांस्कृतिक पहचान के प्रति जागरूक करने का साधन भी है। उन्होंने लिखा है, "साहित्य केवल कल्पना नहीं है; यह समाज के अस्तित्व और उसकी सांस्कृतिक विरासत का सजीव चित्रण है" (दिनकर 78)। यह दृष्टिकोण साहित्य को समाज के लिए एक अनिवार्य साधन बनाता है। दिनकर ने अपने लेखन में इस बात को रेखांकित किया कि साहित्य समाज को उसकी जड़ों से जोड़ने और उसे भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संस्कृति के चार अध्याय में दिनकर ने यह भी समझाया कि भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता और समन्वय ने इसे समय की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाया। उन्होंने दिखाया कि भारतीय संस्कृति न केवल बाहरी आक्रमणों को सहन करने में सक्षम रही, बल्कि उसने उन्हें आत्मसात कर अपनी मौलिकता को और समृद्ध किया। यह प्रक्रिया भारतीय समाज को उसकी सांस्कृतिक पहचान और स्थिरता प्रदान करती है।

दिनकर के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके समय में थे। उनके अनुसार, साहित्य समाज को उसकी सांस्कृतिक विरासत की ओर लौटाने और उसमें नई जान फूंकने का साधन है। उन्होंने यह भी दिखाया कि कैसे साहित्य समाज को नई दिशा देने और उसकी सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करने में मदद कर सकता है। उनके विचार न केवल अतीत को समझने में सहायक हैं, बल्कि वे समाज के भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक हैं।

3. परंपरा और आधुनिकता का संतुलन

दिनकर ने परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उनके अनुसार, परंपरा समाज की सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करती है, जबकि आधुनिकता इसे प्रगति की ओर ले जाती है। उन्होंने लिखा है, "परंपरा और आधुनिकता विरोधी नहीं हैं, बल्कि वे एक-दूसरे के पूरक हैं।" उनका यह दृष्टिकोण भारतीय समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो सदियों से परंपराओं को संरक्षित करते हुए आधुनिकता को आत्मसात करने का प्रयास करता आ रहा है।

उनकी कृति उर्वशी परंपरा और आधुनिकता के इस संतुलन का प्रतीक है। इस महाकाव्य में उन्होंने प्रेम, काम, और अध्यात्म के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया कि परंपरा और आधुनिकता को संतुलित करना न केवल संभव है, बल्कि यह समाज के विकास के लिए आवश्यक भी है। उनके अनुसार, "आधुनिकता का सही अर्थ यह है कि हम अपनी परंपराओं को आधुनिक संदर्भ में पुनर्परिभाषित करें" (दिनकर 89)।

दिनकर ने स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में इस विचार को लागू किया। उन्होंने दिखाया कि भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से प्रेरणा लेते हुए आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक विचारधाराओं को आत्मसात कर सकता है। उनका यह दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक है, जब भारतीय समाज वैश्वीकरण और सांस्कृतिक क्षरण जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है।

4. धार्मिक सहिष्णुता

धार्मिक सहिष्णुता भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है, जो इसे अन्य संस्कृतियों से अलग और विशिष्ट बनाता है। यह केवल धार्मिक विविधता को सहन करने का विचार नहीं है, बल्कि इसे समझने, अपनाने और उसका सम्मान करने की भावना को भी प्रकट करता है। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी रचनाओं में इस विचार को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को विभिन्न धर्मों, परंपराओं, और विचारधाराओं का संगम बताया। दिनकर का मानना था कि सहिष्णुता भारतीय समाज की स्थिरता और समरसता का आधार है।

उनकी कृति संस्कृति के चार अध्याय में धार्मिक सहिष्णुता का यह विचार बार-बार प्रकट होता है। उन्होंने लिखा है, "भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सहिष्णुता और समन्वय में निहित है।" इस कथन के माध्यम से दिनकर यह स्पष्ट करते हैं कि भारतीय समाज ने हमेशा बाहरी धर्मों और विचारों का न केवल स्वागत किया, बल्कि उन्हें आत्मसात करके अपनी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाया। उनका मानना था कि यह प्रक्रिया भारतीय समाज को एकजुट और मजबूत बनाती है।

दिनकर ने सहिष्णुता को केवल सहन करने की क्षमता तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने इसे एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में देखा, जिसमें अन्य धर्मों और परंपराओं को समझने, अपनाने और उनके प्रति सम्मान प्रकट करने की भावना निहित है। उनके अनुसार, "सच्ची सहिष्णुता तब होती है जब हम दूसरों के धर्म और परंपराओं को अपने समाज में एक स्थान देने के लिए तैयार हों।" यह विचार उनके साहित्य को एक गहन और सार्वभौमिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

दिनकर के अनुसार, सहिष्णुता भारतीय समाज की एक अद्वितीय शक्ति है, जिसने इसे विभिन्न आक्रमणों और सांस्कृतिक परिवर्तनों के बावजूद स्थिर और जीवंत बनाए रखा। उनका मानना था कि सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की आत्मा है, जो इसे अन्य संस्कृतियों के लिए प्रेरणादायक बनाती है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि धर्म का उद्देश्य समाज को जोड़ना है, न कि उसे विभाजित करना। उन्होंने लिखा है, "धर्म का सही अर्थ मानवता की सेवा है, और यह तभी संभव है जब हम सहिष्णुता और समरसता को अपनाएं।"

उनकी कविताओं और गद्य में यह विचार स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उनकी रचनाएँ सहिष्णुता और समरसता के संदेश से ओत-प्रोत हैं। उदाहरण के लिए, संस्कृति के चार अध्याय में उन्होंने यह दिखाया कि कैसे भारतीय संस्कृति ने वैदिक, बौद्ध, इस्लामी, और अन्य परंपराओं को आत्मसात किया। यह प्रक्रिया केवल भारतीय समाज को स्थिर बनाए रखने में सहायक नहीं थी, बल्कि उसने इसे और समृद्ध भी किया।

दिनकर ने यह भी रेखांकित किया कि सहिष्णुता केवल अतीत की एक विरासत नहीं है; यह वर्तमान और भविष्य के लिए एक अनिवार्य गुण है। उनके अनुसार, "आज के वैश्विक समाज में, जहां विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच संवाद और संपर्क बढ़ रहा है, सहिष्णुता और भी आवश्यक हो गई है।" यह विचार आज के भारतीय समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, जो विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के बीच समरसता बनाए रखने की चुनौती का सामना कर रहा है।

उनकी कविताएँ इस दिशा में मार्गदर्शक का काम करती हैं। वे यह सिखाती हैं कि सहिष्णुता केवल एक नैतिक गुण नहीं है, बल्कि यह समाज की स्थिरता और प्रगति के लिए आवश्यक है। उन्होंने यह भी दिखाया कि धर्मों के बीच सहिष्णुता और समरसता कैसे राष्ट्रीयता और समाज की स्थिरता को सुदृढ़ कर सकती है।

5. राष्ट्रीय चेतना

रामधारी सिंह 'दिनकर' का साहित्य राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का एक प्रभावी और सशक्त माध्यम है। उनकी रचनाएँ भारतीय समाज को उसकी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान के प्रति जागरूक करती हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, जब भारतीय समाज राजनीतिक और सांस्कृतिक दमन का सामना कर रहा था, तब दिनकर की कविताओं और गद्य ने समाज को प्रेरणा और आत्मविश्वास प्रदान किया। उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं थीं; वे समाज में आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, और आत्मनिर्भरता की भावना को जागृत करने का माध्यम थीं।

उनकी प्रसिद्ध कविता "हिमालय" राष्ट्रीय चेतना का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इस कविता में हिमालय को भारतीय संस्कृति, स्थिरता, और गौरव का प्रतीक बताया गया है। दिनकर ने इसे न केवल भारतीय भौगोलिक अखंडता का प्रतीक माना, बल्कि इसे भारतीय समाज की स्थिरता, शक्ति, और सहिष्णुता का प्रतीक भी बताया। उन्होंने लिखा, "हिमालय हमारे समाज के आत्मसम्मान और उसकी आंतरिक शक्ति का द्योतक है।" यह कविता

भारतीय समाज में निहित आत्मनिर्भरता की भावना को जागृत करती है और यह दिखाती है कि भारतीय समाज किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम है।

दिनकर का मानना था कि राष्ट्रीयता केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं हो सकती। उनके अनुसार, राष्ट्रीयता का वास्तविक आधार सांस्कृतिक और सामाजिक एकता में है। उन्होंने लिखा है, "भारतीय राष्ट्रीयता की जड़ें उसकी सांस्कृतिक विविधता और सहिष्णुता में हैं" (दिनकर 102)। यह विचार स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विशेष रूप से प्रासंगिक था, जब भारत विभिन्न धर्मों, भाषाओं, और संस्कृतियों में विभाजित था। दिनकर ने दिखाया कि राष्ट्रीयता का अर्थ केवल स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं है; इसका अर्थ यह भी है कि एक समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान और मूल्यों को बनाए रखते हुए एकजुट हो।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, दिनकर की कविताएँ समाज को प्रेरित करने का माध्यम बनीं। उनकी रचनाएँ भारतीय समाज के भीतर आत्मसम्मान की भावना को बढ़ावा देती थीं। उन्होंने यह सिखाया कि भारतीय समाज को अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक जड़ों पर गर्व होना चाहिए। उनके अनुसार, "राष्ट्रीयता की भावना तब तक प्रबल नहीं हो सकती, जब तक समाज अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति सजग न हो।"

दिनकर ने राष्ट्रीय चेतना को सांस्कृतिक समन्वय और सहिष्णुता से जोड़ा। उन्होंने यह दिखाया कि भारतीय समाज की ताकत उसकी विविधता में निहित है। उनके अनुसार, "भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता न केवल उसकी पहचान है, बल्कि यह उसकी सबसे बड़ी ताकत भी है।" उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय समाज को सांस्कृतिक विविधता को समृद्धि के एक साधन के रूप में देखना चाहिए, न कि इसे विभाजन का कारण मानना चाहिए।

दिनकर का यह दृष्टिकोण आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना स्वतंत्रता संग्राम के समय था। आज जब भारतीय समाज वैश्वीकरण और सांप्रदायिकता जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब दिनकर की राष्ट्रीयता की अवधारणा एक मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकती है। उन्होंने यह दिखाया कि राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का प्रतीक नहीं है; यह सांस्कृतिक, सामाजिक, और नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का प्रतीक भी है।

उनकी रचनाएँ समाज को यह सिखाती हैं कि एक राष्ट्र की ताकत उसकी सांस्कृतिक जड़ों में है। उन्होंने लिखा, "एक मजबूत राष्ट्र वही है, जो अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझे, उसका सम्मान करे, और उसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाए।" उनकी यह दृष्टि भारतीय समाज को उसकी सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय गौरव के प्रति सजग बनाती है।

इस प्रकार, रामधारी सिंह 'दिनकर' का साहित्य राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। उनकी रचनाएँ समाज को यह सिखाती हैं कि राष्ट्रीयता केवल स्वतंत्रता प्राप्त करने का लक्ष्य नहीं है; यह समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक एकता का आधार है। उनका साहित्य आज भी भारतीय समाज को प्रेरित करने और उसे नई दिशा देने का काम करता है।

6. भविष्य की संभावनाएँ और निष्कर्ष

रामधारी सिंह 'दिनकर' का साहित्य भारतीय संस्कृति और समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। उनकी रचनाएँ यह सिखाती हैं कि कैसे परंपराओं को संरक्षित करते हुए आधुनिकता को आत्मसात किया जा सकता है। उनके विचार आज भी सांस्कृतिक क्षरण, सांप्रदायिकता, और सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकते हैं।

उनकी कृति संस्कृति के चार अध्याय और उनकी कविताएँ यह दिखाती हैं कि भारतीय संस्कृति की स्थिरता उसकी सहिष्णुता, समरसता, और समन्वय में है। उनका साहित्य केवल अतीत का दर्पण नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

दिनकर, रामधारी सिंह. संस्कृति के चार अध्याय. दिल्ली: साहित्य अकादमी, 1956।
दिनकर, रामधारी सिंह. उर्वशी. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1961।
शर्मा, रामविलास. दिनकर: एक साहित्यिक अध्ययन. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 1980।

सिंह, नामवर. आधुनिक साहित्य का स्वरूप. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1975।
त्रिपाठी, चंद्रशेखर. "भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता का विचार." साहित्य विमर्श, खंड 8, 2015, pp. 56-89।
चौधरी, रघुवीर. "भारतीय साहित्य में सांस्कृतिक चेतना." भारतीय साहित्य समीक्षा, खंड 10, 2012, pp. 45-78।
गौतम, शिवानी. भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक चेतना. वाराणसी: ज्ञान भारती प्रकाशन, 2011।